सन्दर्भ ग्रंथ – रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक)
सम्पा. डॉ. प्रेम सुमन जैन , साहित्य संस्थान, उदयपुर, 1986
अनुवाद एवं ग्रन्थ समीक्षा

इकाई पॉच – 20 अंक

गउडवहो (बाक्पतिराज) सं – एन. जी. सुरू
गाथा संख्या 62–64, 68, 70–73, 75–71, 850–60, 862–67, 871–885, 887, 892–897, 900, 902–3, 905–908 कुल 50 गाथाएं
सन्दर्भ पुस्तिका : वाकपतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1–50
संकलन – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर–1983
व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन

सहायक पुस्तकें :

1 प्रवचनसार सम्पा. डा. एन. एन. उपाध्ये (भूमिका)

2 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ जगदीश चन्द्र

3 भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान – डॉ हीरानन्द जैन

4 भगवती आराधना (शिवार्य) भाग 2 सं – पं. के. सी. शास्त्री जैन संस्कृति संरक्षक संघ, सोलापुर, 1978

5– महावीर और उनकी आचार्य–परम्परा, भाग 2 डॉ. नेमिचन्द

6– अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ नेमिचन्द शास्त्री

7– शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण –डॉ. प्रेम सुमन जैन भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली, 2001

जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य एम. ए. (उत्तरार्द्ध)

सत्र–2004–2005 / परीक्षा–2004

प्रश्नपत्र पंचम : पाण्डुलिपि–सम्पादन, छन्द एवं शिलालेख

100 अंक

इकाई एक 20 अंक

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

1– पाण्डुलिपि विज्ञान का सवरूप एवं महत्व
2– पाण्डुलिपि की रचना–प्रक्रिया एवं चिन्ह
3– प्राप्ति –विवरण, बाह्य एवं अंतरंग परिचय
4– लिपी के प्रकार (ब्राह्मी, देवनगरी आदि)

इकाई दो – 20 अंक

पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त –

5– वर्ण–विकार एवं शब्द एवं अर्थ की समस्या
6– पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ–निर्माण
7– काल–निर्धारण के प्रमुख आधार
8– प्रमुख ग्रन्थ – भण्डारों का परिचय एवं महत्व

इकाई तीन – 20 अंक

प्राकृत–अपभ्रंश छन्द एवं लाक्षणिक साहित्य

(क) प्राकृत एवं अपभ्रंष छन्द–10 अंक
निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण–
गाहा, पथ्या, विपुला उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी एवं स्कन्धक एवं द्विपदि, कडवक, घत्ता, पज्झाडिका, हेला, चौपाइया

(ख) प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य–10 अंक
छन्द, अलंकार एवं कोष के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय

इकाई चार – 20 अंक

प्राकृत शिलालेख

1– अशोक के 1–8 शिलालेख (गिरनार पाठ) एवं खारबेल का शिलालेख का सट्टिपण अनुवाद

2– प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रष्न

इकाई पॉच – 20 अंक

प्राकृत काव्य साहित्य परिचय एवं व्याख्या सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम सर्ग (1–40 गाथाएं), सम्पादक – डॉ. राजाराम जैन

सहायक पुस्तकें :

1 अशोक – डॉ भण्डारकर

2 जैन साहित्य का वृहत इतिहास भाग 6, डॉ. गुलांबचन्द चौधरी

3 छंदानुशासन–हेमचन्द

4 प्राकृत पेंगलम (सम्बन्धित अंश)

5 पाठालोचन की भूमिका – डॉ कत्रो

6 पाण्डुलिपि सम्पादनकला – सं – डा. रामगोपाल शर्मा दिनेश

7 पाण्डुलिपि विज्ञान–डॉ सत्येन्द्र –राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

8 खारबेल शिलालेख – डॉ शशिकान्त जैन

9 सेतुबन्ध (प्रथमसर्ग) सम्पा. – डॉ हरिशंकर पाण्डेय

10 प्राकृतभाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास (247–296)

11. जैन साहित्य का वृहत इतिहास भाग 5, पं. अम्बालाल शाह